E-CONTENT

Subject : Economics

Class : B.A Part I (Paper I)

Topic : Classical Theory of Interest

(ब्याज का प्रतिष्ठित सिद्धान्त)

By :-

EKATA KUMARI

Guest faculty

(Assistant Proffesor

Mahila College Sasaram

Rohtas

Email I'd :

bhardwajekata@gmail.com

ब्याज का प्रतिष्ठित सिद्धांत :-

ब्याज के प्रतिष्ठित सिद्धांत का प्रतिपादन वालरस, पीगु, मार्शल, नाईट आदि अर्थशास्त्रियों ने किया था। ब्याज के बारे में सबसे पहले सिद्धांत को प्रतिष्ठित सिद्धांत या वास्तविक सिद्धांत कहते हैं। इसे वास्तविक सिद्धांत इसलिए कहते हैं क्योंकि यह वास्तविक कारकों जैसे कि पूँजी की उत्पादकता बचत की प्रवृत्ति आदि पर आधारित है। इसमें पूंजी की बचत और पूंजी की उत्पादकता द्वारा ब्याज दर का निर्धारण दिखाया गया है। हम प्रतिष्ठित सिद्धांत के दो अंगों की व्याख्या करेंगे, प्रथम यह कि ब्याज की दर उत्पन्न क्यों होती है। द्वितीय यह कि इसके अनुसार ब्याज की दर का निर्धारण किस प्रकार होता है।

ब्याज क्यों उत्पन्न होता है ?

ब्याज क्यों उत्पन्न होता है, के बारे में विभिन्न प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का अलग-अलग मत है। इसके बारे में कई सिद्धांत प्रस्तुत किये गए जिनका विवेचन हम नीचे करते हैं। जो इस प्रकार है :-

(i) पूंजी की सीमांत उत्पादकता सिद्धांत
(ii) उपभोग स्थगन तथा प्रतीक्षा सिद्धांत
(iii) ब्याज का बट्टा सिद्धांत
(iv) फिशर का समय अधिमान्यता सिद्धांत

निष्कर्ष :-

हमने ऊपर ब्याज क्यों उत्पन्न होता है, के बारे में विभिन्न प्रतिष्ठित सिद्धांतों की व्याख्या की है। कोई एक सिद्धांत ब्याज क्यों उत्पन्न होता है की पूरी व्याख्या नहीं करता, परन्तु प्रत्येक सिद्धांत में सत्य का अंश विद्यमान है। इसलिए सभी सिद्धांतों को मिलाकर ही ब्याज की पूर्ण व्याख्या होती है। मांग के पक्ष में तो पूंजी की अधिक उत्पादन शक्ति का तत्व क्रियाशील है, जबकि पूर्ति पक्ष पर उपभोग स्थगन तथा समय अधिमान्यता सभी प्रभाव डालते हैं।

पूंजी की मांग :-

पूंजी की मांग से अभिप्राय बचतों की मांग से है। चूंकि पूंजी की मांग निवेश के लिए की जाती है, इसलिए पूंजी अथवा बचतों की मांग को 'निवेश की मांग' भी कहा जाता है। पूंजी की मांग इसलिए की जाती है कि पूंजी - पदार्थों में उत्पादकता का गुण

होता है। ह्रासमान प्रतिफल नियम के अंतर्गत पूंजी की अधिक इकाइयों के प्रयोग का परिणाम यह होता है कि पूंजी की सीमांत उत्पादकता गिरती जाती है। इसलिए एक उत्पादक पूंजी का उपयोग उस बिंदु तक करेगा जहाँ पूंजी की सीमांत उत्पादकता ब्याज की बाजार-दर के बराबर होती है। यदि ब्याज की बाजार-दर ऊँची होती है तो पूंजी की मांग में कमी होती है और ब्याज-दर कम होने पर पूंजी की मांग में वृद्धि होती है। पूंजी की मांग में कमी अथवा वृद्धि के द्वारा उत्पादक पूंजी की सीमांत उत्पादकता को ब्याज-दर के साथ समायोजित करता है। पूंजी की मांग तथा ब्याज-दर में विपरीत संबंध होने के कारण पूंजी का मांग-वक्र दायीं ओर नीचे गिरता हुआ होता है। रेखाचित्र में इसे II वक्र द्वारा दिखाया गया है।

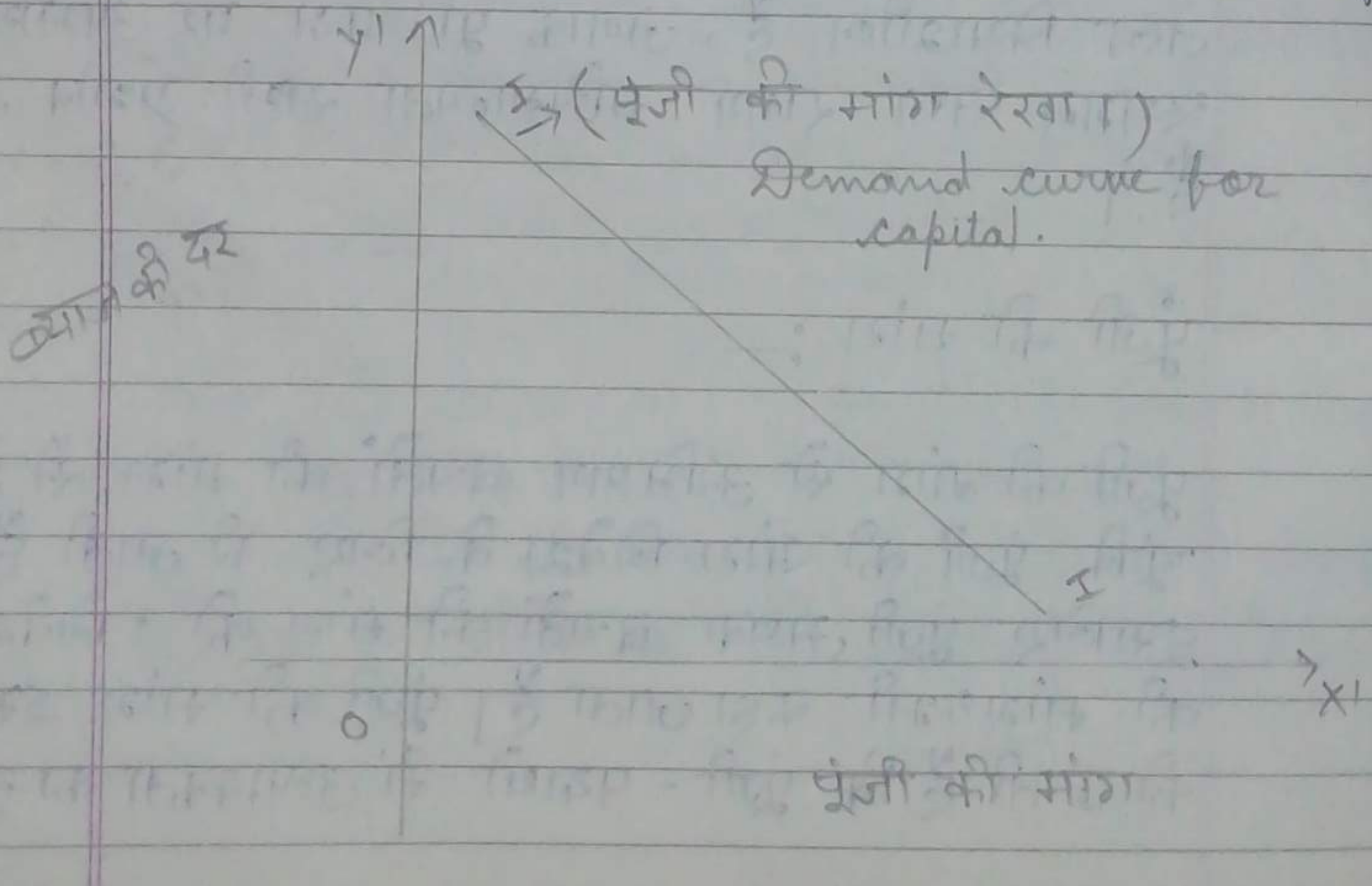

पूंजी की पूर्ति :-

पूंजी की पूर्ति बचत - अनुसूची पर निर्भर करती है। बचतें त्याग या प्रतीक्षा का परिणाम होती हैं। लोगों के त्याग तथा प्रतीक्षा का पुरस्कार ब्याज के रूप में दिया जाता है। प्रतिष्ठित सिद्धांत के अनुसार, ब्याज-दर इतनी ऊँची होनी चाहिए कि वह सीमांत बचतकर्ता को बचत करने के लिए प्रोत्साहित कर सके। साधारणतः ब्याज - दर ऊँची होने पर बचत अधिक होती है और ब्याज-दर कम होने पर बचतें भी कम हो जाती हैं। ब्याज - दर तथा बचतों में सीधा संबंध होने के कारण पूंजी की पूर्ति का पूर्ति वक्र दायीं ओर ऊपर उठता हुआ होता है, जैसा कि रेखाचित्र में SS रेखा को देखने से ज्ञात होता है।

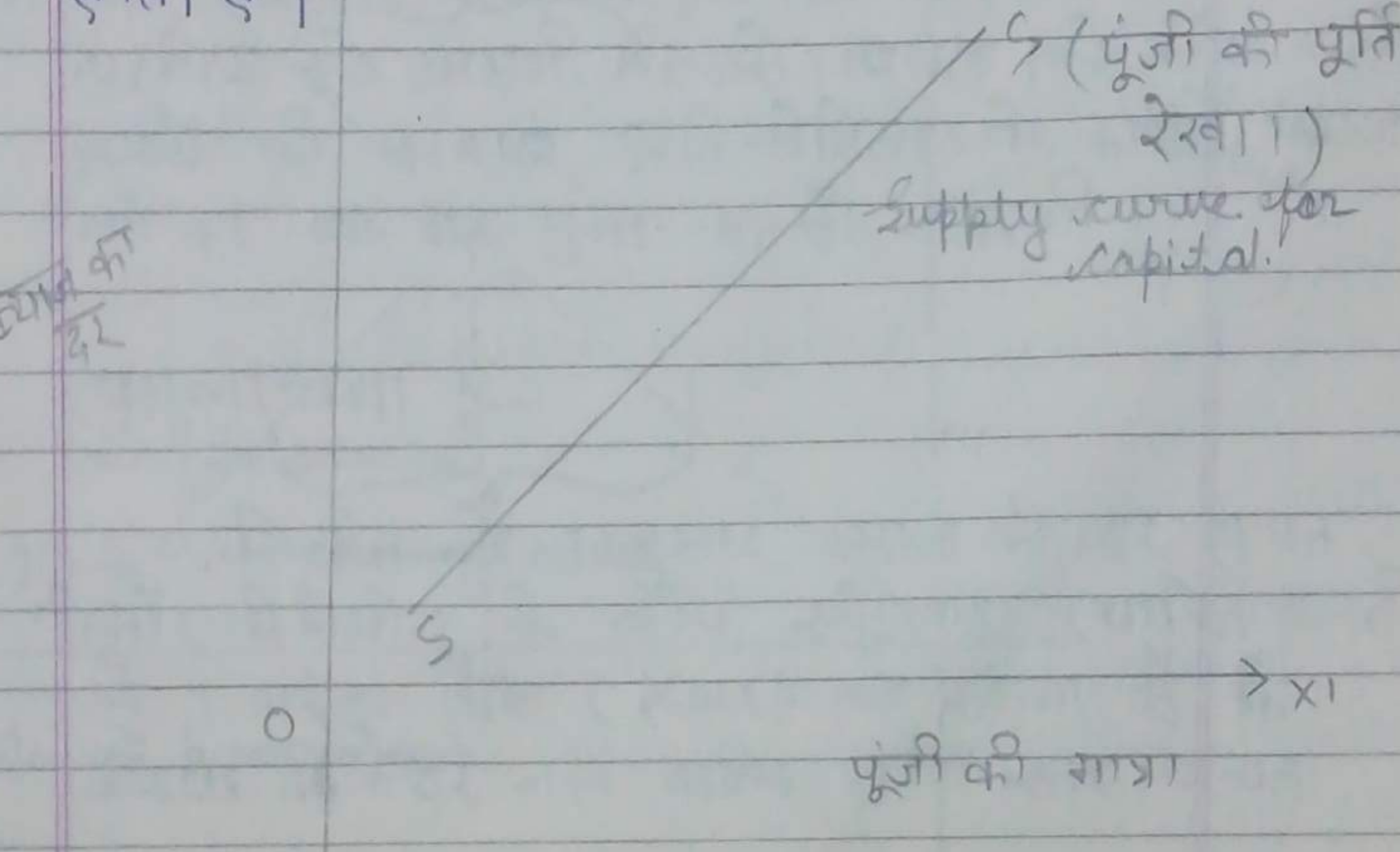

मांग और पूर्ति का संतुलन :-

अब हमने मांग और पूर्ति दोनों पक्षों की जानकारी कर ली है और दोनों वक्रों के स्वरूप को जान लिया है। अब हम देखेंगे कि मांग और पूर्ति की शक्तियों की परस्पर क्रिया से ब्याज की दर कैसे निर्धारित होगी। ब्याज की दर उस स्तर पर निर्धारित होगी जिस पर निवेश के लिए बचतों की मांग और बचतों की पूर्ति एक-दूसरे के बराबर होंगे। इसे रेखाचित्र द्वारा नीचे दर्शाया गया है, जो इस प्रकार है :—

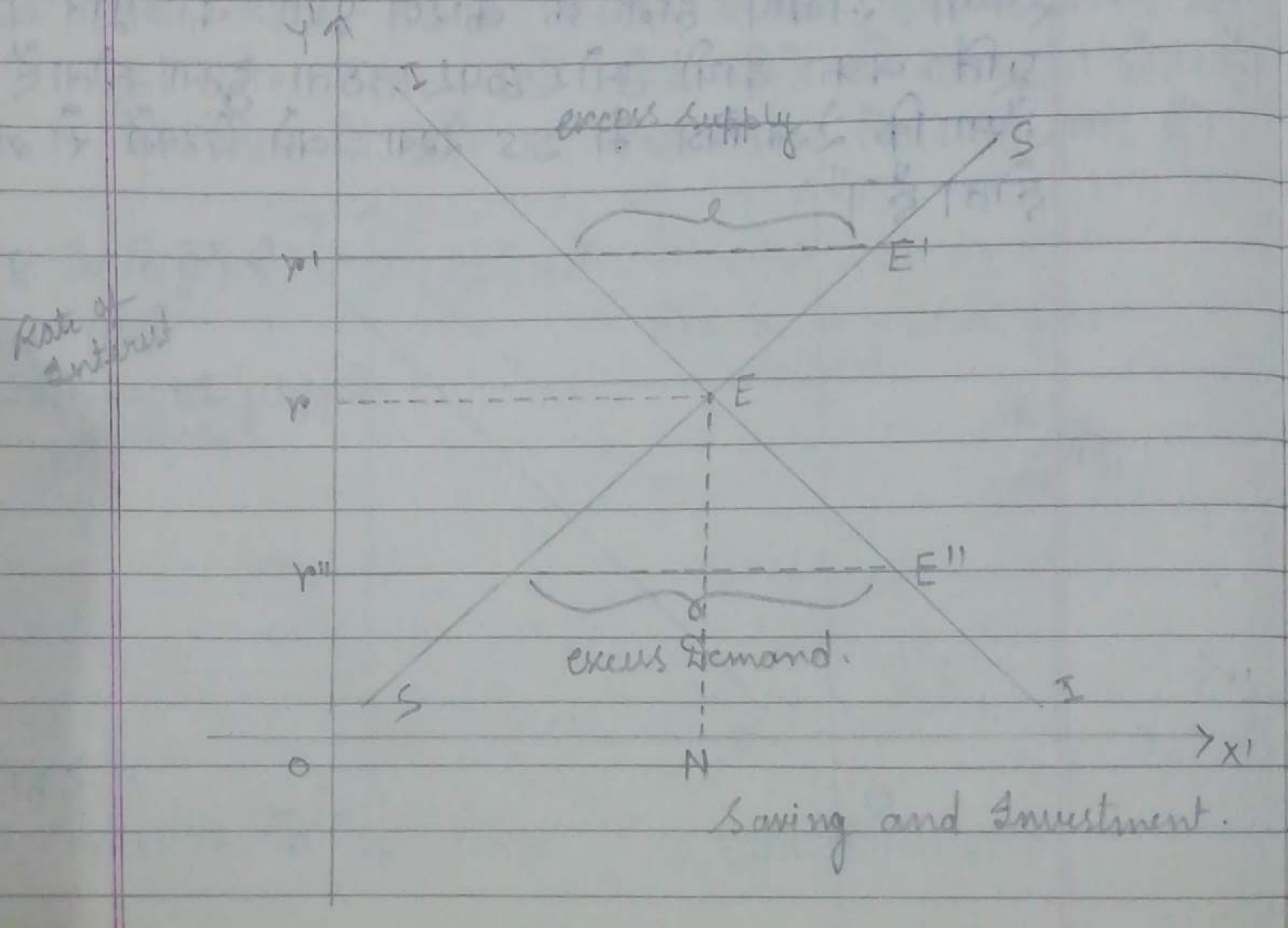

रेखाचित्र में II निवेश मांग वक्र है और SS बचतों का पूर्ति वक्र है। निवेश मांग वक्र II और बचत पूर्ति वक्र SS एक-दूसरे को or ब्याज की दर पर काटते हैं। अतएव ब्याज की दर or निर्धारित होगी। इस संतुलित ब्याज की दर or पर निवेश के लिए बचत की मांग और बचत की पूर्ति दोनों ON मात्रा के बराबर हैं।

यदि ब्याज की दर or से अधिक हो तो इस पर बचत की पूर्ति बचतों की मांग की अपेक्षा अधिक होगी। इसका परिणाम यह होगा कि बचत करने वालों में प्रतियोगिता के फलस्वरूप ब्याज की दर घट कर or दर पर आय जाएगी यदि ब्याज की दर or से कम है तो निवेश के लिए बचतों की मांग बचतों की पूर्ति की अपेक्षा अधिक हो जाएगी जिससे बचत की मांग करने वालों की परस्पर प्रतियोगिता के कारण ब्याज की दर बढ़ कर पुनः or हो जाएगी।

आलोचना :-

(i) इस सिद्धांत के अनुसार ब्याज की दर बचत और विनियोग के बीच संतुलन स्थापित करती है। परंतु कैन्स (Kaue) का कहना है कि ब्याज की दर नहीं बल्कि आय स्तर बचत

और विनियोग के बीच संतुलन स्थापित करती है।

(ii) इस सिद्धांत के अनुसार ब्याज खर्चा न करने की कीमत है। परंतु कैंस के अनुसार ब्याज अपसंचयन (Dishoarding) की कीमत है।

(iii) इस सिद्धांत के अनुसार जैसे - जैसे ब्याज की दर घटती जाएगी। विनियोग स्तर में वृद्धि होती जाएगी। दूसरे शब्दों में विनियोग के लिए पूंजी की मांग बढ़ती जाएगी। परंतु इतिहास साक्षी है कि 1930 के महामंदी के बाद ब्याज की दर को घटा कर करीब आधा प्रतिशत (%) और 2% तक भी कर दिया गया है। फिर भी उस समय अर्थात मंदी को देखते हुए विनियोग में कोई खास वृद्धि नहीं हो पाई थी। कारण विनियोग केवल ब्याज दर पर नहीं बल्कि पूंजी की सीमांत कार्यक्षमता पर निर्भर करती है।

Investment (निर्भर करती है)

↓ Rate of Interest (ब्याज की दर)

↓ Marginal efficiency of capital (भविष्य में आय प्राप्त होने की आशा।)

यह कोई आवश्यक नहीं है कि विनियोग इतने अधिक ब्याज लोचदार हो।

(iv) इस सिद्धांत के अनुसार ब्याज दर में वृद्धि होने के साथ बचत की मात्रा में वृद्धि होती है। परंतु जिन लोगों की आय बहुत कम है। चाहे ब्याज दर को कितनी भी बढ़ा दी जाए। वे बचत करने में अपने आप को असमर्थ पाएँगे। अतः यह कहना गलत है कि ब्याज बढ़ने से बचत की मात्रा में वृद्धि होगी।

(v) इस सिद्धांत के अनुसार मुद्रा की परिभाषा पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं है। इस सिद्धांत के अनुसार मुद्रा की पूर्ति के अंतर्गत इन्होंने बैंक साख को सम्मिलित नहीं किया है।

(vi) इस सिद्धांत के अनुसार बचत की परिभाषा भी बहुत संकीर्ण है। कारण व्यक्ति पूर्वजों द्वारा कमाये गए धन से भी बचत प्राप्त करते हैं। इस सिद्धांत में इसे सम्मिलित नहीं किया गया है।

(vii) इस सिद्धांत के अनुसार व्यापारी केवल व्यवसाय पर ही विनियोग करते हैं। इस सिद्धांत में उपभोग लोन के बारे में कुछ भी व्याख्या नहीं

की गई है।

(viii) इस सिद्धांत के अनुसार 'कैस' का कहना है कि यह सिद्धांत अतिधारिणीय है। कारण इससे ब्याज की दर का निर्धारण पूंजी की मांग और पूंजी पर निर्भर करती है। पूंजी की पूर्ति बचत पर निर्भर करती है। और बचत ब्याज दर पर यानि बिना ब्याज दर को जाने हम बचत की जानकारी नहीं प्राप्त कर सकते हैं। अतः यह सिद्धांत ब्याज दर के निर्धारण में सही व्याख्या नहीं कर पाता है।

इन सभी आलोचनाओं के कारण आगे चल कर John Maynard Keynes ने ब्याज निर्धारण के तरलता अधिमान सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

(ix) इस सिद्धांत में वास्तविक तत्वों की व्याख्या की गई है। जैसे - उत्पादकता, मितव्ययता आदि। मौद्रिक तत्वों की अवहेलना की गई है। जब वास्तविक तत्वों के साथ मौद्रिक तत्वों की व्याख्या नहीं किया जाए। ब्याज का सिद्धांत तब तक पूर्ण नहीं समझा जाता है।

(x) ये सिद्धांत पूर्ण रोजगार के अवास्तविक मान्यता पर आधारित है। इस सिद्धांत के अनु-

सार उत्पादन के सभी साधन पूर्ण रोजगार में लगे हुए हैं। कोई भी साधन बेरोजगार नहीं है। कीन्स का कहना है कि वास्तविक जीवन में पूर्ण - रोजगार नहीं बल्कि अर्धबेरोजगार और बेरोजगारी की स्थिती पाई जाती है।